# लोकतांत्रिक विद्यालय

## कक्षा से सीखे सबक

सम्पादनः
माइकल डब्ल्यू. एपल और
जेम्स ए. बीन
अँग्रेज़ी से अनुवादः स्वयं प्रकाश

**एकलव्य का प्रकाशन**

लोकतांत्रिक विद्यालय
Loktantrik Vidyalaya
मूल पुस्तक *Democratic Schools* का सम्पादनः माइकल डब्ल्यू. एपल और जेम्स ए. बीन
अँग्रेज़ी से अनुवादः स्वयं प्रकाश
आवरण चित्र व डिज़ाइनः अनिता वर्मा

जून 2007 / 2000 प्रतियाँ
80 gsm नेचुरल शेड एवं 210 gsm आर्टकार्ड (कवर) पर प्रकाशित
पराग इनिशिएटिव, सर रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित
मूल्य: 80.00 रुपए
ISBN 81-87171-97-9

प्रकाशक: एकलव्य
ई-7/एचआईजी 453, अरेरा कॉलोनी
भोपाल- 462016, म.प्र.
फोन: (0755) 246 3380
फैक्स: (0755) 246 1703
सम्पादकीय: books@eklavya.in
किताबें मँगवाने के लिए: pitara@eklavya.in

मुद्रक: भण्डारी ऑफसेट, भोपाल, फोन: (0755) 246 3769

# विषय सूची


इस पुस्तक के लेखक *iv*

आभार *v*

डेमोक्रेटिक स्कूल्स के भारतीय संस्करण का प्राक्कथन *vii*

भूमिका *xi*

1 लोकतांत्रिक विद्यालयों का तर्क 1
जेम्स ए. बीन और माइकल डब्ल्यू. एपल

2 सेन्ट्रल पार्क ईस्ट सेकण्डरी स्कूल:
कार्यान्वयन का कठिन काम 32
डेबोरा मेइयर व पॉल श्वार्ज़

3 कार्यशाला से आगे: व्यावसायिक शिक्षा का पुनराविष्कार 53
लैरी रोज़ेनस्टॉक व एड्रिया स्टाइनबर्ग

4 ल इस्कूला फ्रेटनी: लोकतंत्र की ओर एक यात्रा 76
बॉब पीटरसन

5 परिस्थिति ने हमें विशिष्ट बनाया 109
बारबरा एल. ब्रॉडहेगन

6 लोकतांत्रिक विद्यालयों के सबक 131
माइकल डब्ल्यू. एपल और जेम्स ए. बीन

# इस पुस्तक के लेखक

माइकल डब्ल्यू. एपल विस्कॉन्सिन विश्वविद्यालय में पाठ्यचर्या और शैक्षिक नीति के प्रोफेसर हैं। पताः University of Wisconsin, 225 N Mills street, Madison, WI 53706, USA.

जेम्स ए. बीन नेशनल कॉलेज ऑफ एजुकेशन, नेशनल-लुइस विश्वविद्यालय, इवान्स्टन, इलिनॉए में प्रोफेसर हैं। पताः Dr. Beane, 928 West Shore Drive, Madison, WI 53715, USA.

बारबरा एल. ब्रॉडहेगन मेडिसन मेट्रोपॉलिटन पब्लिक स्कूल, मेडिसन, विस्कॉन्सिन में पढ़ाती हैं। पताः 928 West Shore Drive, Madison, WI 53715, USA.

डेबोरा मेइयर सेन्ट्रल पार्क ईस्ट सेकण्डरी स्कूल में सह-निदेशक हैं। पताः 1573 Madison Avenue, New York, NY 10029, USA.

बॉब पीटरसन ल इस्कूला फ्रेटनी, मिल्वॉकी में पाँचवीं कक्षा को पढ़ाते हैं। वे रीथिंकिंग स्कूल्स के सम्पादक हैं। इस पुस्तक को प्राप्त करने का पताः Rethinking Schools Ltd, 1001 E Keefe Avenue, Milwaukee, WI 53212, USA.

लैरी रोज़ेनस्टॉक रिंज स्कूल ऑफ टेक्नीकल आर्ट्स के कार्यपालन निदेशक हैं। वे हार्वर्ड ग्रैजुएट स्कूल ऑफ एजुकेशन में व्याख्याता भी हैं। पताः Rindge school of Technical Arts, 459 Broadway, Cambridge, MA 02138, USA.

पॉल श्वार्ज़ सेन्ट्रल पार्क ईस्ट सेकण्डरी स्कूल के सह-निदेशक हैं। वे हार्वर्ड ग्रैजुएट स्कूल ऑफ एजुकेशन में व्याख्याता भी हैं। पताः Central Park East Secondary School, 1573 Madison Avenue, New York, NY 10029, USA.

एड्रिया स्टाइनबर्ग रिंज स्कूल ऑफ टेक्नीकल आर्ट्स में अकादमिक समन्वयक हैं। पताः Rindge School of Technical Arts, 459 Broadway, Cambridge, MA 02138, USA.

# आभार

इस पुस्तक के लेखक दुनिया भर के स्कूलों के उन हज़ारों समर्पित शिक्षाकर्मियों को धन्यवाद देना चाहते हैं जो रोज़ अपनी कड़ी मेहनत और वचनबद्धता द्वारा दर्शाते हैं कि समालोचनात्मक और लोकतांत्रिक शिक्षा कैसी हो सकती है।

## माइकल डब्ल्यू. एपल और जेम्स ए. बीन

# *डेमोक्रेटिक स्कूल्स* के भारतीय संस्करण का प्राक्कथन

डेमोक्रेटिक स्कूल्स के प्रथम संस्करण को प्रकाशित हुए दस साल से ज़्यादा हो गए हैं। इन वर्षों में इस किताब का वैसा ही असर हुआ जैसी उम्मीद हम लोगों ने की थी। पुस्तक की हज़ारों, लाखों प्रतियाँ वर्तमान और भावी अध्यापकों, प्रशासकों, शिक्षा सम्बन्धी नीति निर्धारकों, समुदाय के सदस्यों, कार्यकर्ताओं तथा कई अन्य लोगों के हाथों में पहुँच गईं। ऐसा सिर्फ अमरीका में ही नहीं, सारी दुनिया में हुआ। इस पुस्तक का अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ। स्पेन, पुर्तगाल, जापान, ब्राज़ील और लेटिन अमरीका के अन्य क्षेत्रों में इसके अनगिनत संस्करण प्रकाशित हुए – और अब भारत में भी हो रहा है। अन्यत्र भी काम चालू है। यह समझने के लिए कि अपने राष्ट्र या समुदाय में विद्यालयों को बेहतर बनाने के लिए क्या किया जाना चाहिए, प्रतिबद्ध शिक्षाशास्त्रियों, सामुदायिक दलों, सरकारी कर्मचारियों, राष्ट्रीय शिक्षा यूनियनों और स्वयंसेवी संस्थाओं ने इस पुस्तक को उपयोगी पाया है।

बेशक यह सब जानकर बड़ी तसल्ली मिलती है। फिर भी इस प्रकार की किताब का इतना व्यापक प्रभाव कुछ अधिक महत्वपूर्ण बातों का द्योतक होता है। यह दुनिया भर में ऐसे प्रतिबद्ध लोगों की निष्ठा का द्योतक है जो शिक्षा को मानकीकृत परीक्षामूलक उपलब्धियों के कुशल प्राप्तांकों से उठाकर उसे उसके नाम के अनुरूप बनाना चाहते हैं। यह दुनिया के विभिन्न भागों में प्रचलित ऐसे पाठ्यक्रमों से लोगों के बढ़ते असन्तोष का भी द्योतक है जिनका समाज में छात्रों के जीवन और संस्कृति से कोई लेना-देना नहीं होता। इसी तरह यह इस विश्वास का भी द्योतक है कि

विद्यालय कारखाने नहीं हैं, कि उन्हें हमारे श्रेष्ठतम स्वरूप का प्रतिबिम्ब होना चाहिए। विद्यालय को लोकतंत्र का नाम ही नहीं जपना चाहिए बल्कि उसे जीवन में उतारकर भी दिखाना चाहिए।

जब इन सब चीज़ों को जोड़कर देखा जाता है तो दिखाई देता है कि ज़्यादातर लोग "प्रचलित नीतियों का कोई विकल्प नहीं" जैसी धारणा के पक्ष में नहीं हैं। और ऐसे लोगों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है जो सोचते हैं कि विकल्प है। हमें अक्सर यह समझाने की कोशिश की जाती है कि सुधार सिर्फ मानकीकृत राष्ट्रीय पाठ्यक्रम पर निर्धारित परीक्षा प्रणाली में ही कारगर हो सकते हैं। आमतौर पर यह पाठ्यक्रम समाज के वंचित-उपेक्षित लोगों के ज्ञान, इतिहास और संस्कृति से कोसों दूर होता है, और अक्सर बेहद पुराने पड़ चुके और उबाऊ शिक्षाशास्त्र पर आधारित होता है। अब इसमें निजीकरण और नियम-कायदों को भी जोड़कर अध्यापकों और प्रशासकों को प्रतियोगिता के काँटों से भरी राह पर खड़ा कर दीजिए। हमें समझाने की कोशिश की जाती है कि यदि यह सब कर दिया जाए तो शिक्षा के क्षेत्र में सब कुछ ठीक-ठाक हो सकता है। क्या सचमुच!

इस तर्क के साथ बहुत दिक्कतें हैं। पहली बात तो यह है कि इस किस्म के दावों की पुष्टि के लिए कोई प्रमाण नहीं है। उलटे इस बात का प्रमाण उपलब्ध है कि ये दावे न सिर्फ अमरीका में बल्कि अन्यत्र भी झूठे साबित हो चुके हैं (एपल 2006; वेलेन्ज़ुएला 2005)। यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है। अमरीका और इंग्लैण्ड से बाहर रह रहे लोगों को यहाँ इन "सुधारों" पर चली गम्भीर बहस के बारे में शायद पता नहीं होगा। न शायद उन्हें यह पता होगा कि ऐसे "सुधारों" के चलते वर्गीय तथा जातीय/नस्लीय विषमता घटने की बजाय बढ़ी है। दूसरी बात यह है कि, जैसा इस पुस्तक में बताया गया है, ऐसे संकुचित दावों और धारणाओं का विकल्प है। ऐसा विकल्प उपलब्ध है जो कारगर भी है और जो बेहतर और समृद्ध शिक्षा भी प्रदान करता है (बीन 2005; गटस्टाइन 2006)। ये विकल्प ऐसे दौर में पैदा किए जा रहे हैं जब शिक्षाशास्त्रियों पर अनिवार्य पाठ्यक्रम और परीक्षा प्रणाली पर ध्यान केन्द्रित करने तथा बढ़ती प्रतियोगिता और निजीकरण के लाभों को चित्त में धारण करने का निरन्तर दबाव है।

उपरोक्त परिस्थितियों के परिणाम भारत के वर्तमान शैक्षणिक परिदृश्य में निरन्तर स्पष्ट होते जा रहे हैं। उदाहरण के लिए, भारत में विद्यालयों के

बीच भयंकर फर्क पैदा होता जा रहा है। एक तरफ अमीरों के विद्यालय हैं जो 40 से 50 हज़ार रुपए प्रतिमाह लेकर भी मुनाफा कमा रहे हैं। दूसरी तरफ, सरकारी स्कूलों का पूरा खर्चा 20 से 30 हज़ार तक का है। सरकारी स्कूलों में काम कर रहे अध्यापकों पर इससे दबाव बहुत बढ़ जाता है। उनका वेतन मात्र दो-ढाई हज़ार रुपए होता है। इससे गरीब अभिभावकों पर एक असम्भव किस्म का दबाव बनने लगता है। हमारे और ऐसे लोगों के विचार में जो भारत में शिक्षा को लेकर चिन्ता करते हैं, ऐसी स्थिति में वर्तमान विषमता और बढ़ेगी ही। इसमें लोकतंत्र की भावना को बनाए रखना बेहद कठिन चुनौती है। लेकिन फिर भी लोकतंत्र की भावना को बनाए रखना और उसे लेकर वैकल्पिक शैक्षणिक नीतियाँ बनाना और उन पर अमल करना बेहद ज़रूरी हो जाता है।

डेमोक्रेटिक स्कूल्स का भारतीय संस्करण ऐसे ही विकल्पों के बारे में है। ये उन शिक्षाशास्त्रियों के बारे में भी है जो ऐसे विकल्प निर्मित कर रहे हैं। ये लोग इस पुस्तक को बनाने वालों की प्रतिबद्धता से जुड़े हुए हैं। इस पुस्तक को बनाने वाले खुद को उन शिक्षाकर्मियों, कार्यकर्ताओं और समुदायों के सदस्यों का सचिव जैसा समझते हैं जिनकी आस्था लोकतंत्र की जीवित प्रक्रिया में है और जो इसे नित्य व्यवहार में ला रहे हैं। पुस्तक के अध्यायों से इस तथ्य की भी पुष्टि हो जाती है कि कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी लोकतंत्र के लिए काम करना अब भी सम्भव है, अब भी सफलतापूर्वक किया जा सकता है, और अब भी सार्थक शिक्षा के लिए उठाया जाने वाला एक उपयोगी कदम है। इस अर्थ में पुस्तक में संकलित विवरण इस कठिन समय में हमारे भीतर आशा का संचार करते हैं। इस प्रकार के विवरण और उनसे उपजती आशा ही आपके तथा अन्य अनेक देशों के विद्यालयों और कक्षाओं में लोकतंत्र की मशाल प्रज्वलित रखने के व्यापक आन्दोलन में आधार और प्रेरणा का काम करते हैं। इसी मशाल की तेज़ रोशनी आपको इस पुस्तक के अध्यायों में बिखरी दिखाई देगी।

इस पुस्तक के दोनों सम्पादक अपने अनुभव से यह बात जानते हैं कि चुनौतियों और दबावों के बीच भी भारत भर में ऐसे भी अध्यापक हैं जो विद्यालयों में लोकतंत्र की भावना और यथार्थ बनाए रखने के लिए लगातार संघर्षरत हैं। इस छोटी-सी पुस्तक में शामिल किए गए उदाहरण उनके संघर्ष के साथ एकजुटता की गहरी भावना प्रदर्शित करने के लिए हैं।

हमें आशा है यह पुस्तक भारत में आपके अपने प्रयासों को भी समर्थन प्रदान करेगी।

4 मई 2006

## सन्दर्भ

एपल, माइकल डब्ल्यू. (2006) एजुकेटिंग द "राइट" वे: मार्केट्स, स्टेण्डर्ड्स, गॉड एण्ड इनइक्विलिटी, दूसरा संस्करण. न्यू यॉर्कः रूटलेज.

बीन, जेम्स ए. (2005) अ रीजन टू टीचः क्रिएटिंग क्लासरूम्स ऑफ डिग्निटी एण्ड होप. पोर्ट्समाउथ, एनएचः हाइनमन.

गटस्टाइन, एरिक (2006) रीडिंग एण्ड राइटिंग द वर्ल्ड विद मेथेमेटिक्सः टुवर्ड्स पेडॉगॉजी फॉर सोशल जस्टिस. न्यू यॉर्कः रूटलेज.

वेलेन्जुएला, एन्जेला (सम्पादक) (2005) लीविंग चिल्ड्रन बिहाइंड. अल्बनीः स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यू यॉर्क प्रेस.

## माइकल डब्ल्यू. एपल और जेम्स ए. बीन

# भूमिका: कक्षा से सीखे सबक

हाल ही में हम में से एक (माइकल) कुछ दिनों के लिए लन्दन में रह रहा था। एक दोपहर उसने एक समाचार पत्र में कुछ इस तरह की खबर देखी: "अतिवादी अध्यापकों ने शिक्षा सुधारों को रोका।" कहना न होगा कि माइकल ने अखबार खरीदा और पूरी खबर पढ़ी। पता चला कि प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों का एक दल उस सुधार नीति से बहुत विचलित है जिसके अन्तर्गत विद्यालयों में "सेटिंग" प्रणाली फिर चालू करना प्रस्तावित है। अध्यापकों का कहना है कि यह नीति बगैर पर्याप्त सोच-विचार के लागू की जा रही है। इसके परिणामस्वरूप बच्चों के चयन और छँटनी का काम ज़्यादा सख्ती से किया जाएगा और वास्तव में तो यह नस्ल और वर्ग के आधार पर ही होगा। इस खबर से एक बात तो स्पष्ट हो गई। जहाँ पहले इंग्लैण्ड और अमरीका के लोग मज़ाक में कहते थे कि उन्हें "एक ही भाषा ने बाँट रखा है", वहीं विद्यालयों की आलोचना और इन "समस्याओं" के निदान के लिए सुझाए गए "समाधानों" में इन देशों में ज़रा भी अन्तर नहीं था। दोनों जगह के अखबार एक ही तरह की बातें कर रहे थे। माइकल को लगा कहीं वह न्यू यॉर्क या शिकागो या लॉस एंजलस का अखबार तो नहीं पढ़ रहा! दोनों जगह के अखबार कह रहे थे कि हमारे राष्ट्र और हमारी अर्थव्यवस्था को और अधिक प्रतियोगितापूर्ण होना चाहिए। विद्यालय राष्ट्र और छात्रों की अपेक्षाएँ पूरी नहीं कर पा रहे हैं। हमें उसी पुरानी प्रणाली पर लौट जाना चाहिए जो प्रभावी सिद्ध हुई थी – "सच्चे" ज्ञान और सच्चे अनुशासन की ओर। अध्यापक आवश्यक परिवर्तनों को बाधित कर रहे हैं। दोनों तरफ दावा किया जा रहा था कि समस्या का हल केन्द्रीकृत नियंत्रण और बाज़ार अनुशासन के बीच

समुचित तालमेल में ही निहित है। और इस तरह की आवाज़ें इंग्लैण्ड और अमरीका तक ही सीमित नहीं हैं। कोई भी देख सकता है कि ऐसी ही आवाज़ें ऑस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैण्ड में भी उठ रही हैं।

इस खबर ने माइकल को इन आवाज़ों की खामियों पर और गहराई से सोचने को प्रेरित किया। बेशक विद्यालयों में ऐसी चीज़ें भी थीं जिन्हें बदला जाना ज़रूरी था; लेकिन इन प्रस्तावित "सुधारों" से तो विद्यालयों की हालत का और भी खराब हो जाना लगभग तय था। जब माइकल अमरीका लौटा तो इस पुस्तक के दोनों सम्पादक समस्या पर विचार करने के लिए बैठे। जल्द ही यह एकदम साफ हो गया कि जो विद्यालय अपने समक्ष उपस्थित वास्तविकताओं से निपटने में सफल रहे हैं, वे इससे ठीक उलटी दिशा में जाकर ही ऐसा कर पाए हैं। जो पुस्तक आप पढ़ने जा रहे हैं वह बताएगी कि क्यों।

लोकतांत्रिक विद्यालय चार ऐसे विद्यालयों की कहानी है जिन्होंने अपने सम्पूर्ण पाठ्यक्रम का आधार लोकतांत्रिक और आलोचनात्मक शिक्षण पद्धतियों को बनाया। ये विद्यालय छात्रों और समुदाय की ज़रूरतों, उनकी संस्कृति और इतिहास पर आधारित शिक्षा के लिए प्रतिबद्ध हैं। ये नस्लवाद विरोधी, समलैंगिकता-भय विरोधी और लिंगभेद विरोधी सिद्धान्तों के लिए प्रतिबद्ध हैं, और सामाजिक न्याय के प्रति गहरे सरोकार के गिर्द संयोजित हैं। ये कोरे अमूर्त सिद्धान्त नही हैं, बल्कि विद्यालय के पाठ्यक्रम और शिक्षण पद्धति में गहरे तक गुंजित हैं। शिक्षण पद्धति में परस्पर विचार-विमर्श से तय किया गया पाठ्यक्रम, छात्रों व समुदाय की विस्तृत भागीदारी और मूल्यांकन के लचीले रूप शामिल हैं। ये प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च माध्यमिक विद्यालय हैं जो "सार्वजनिक" (अर्थात राज्य सहायता प्राप्त) हैं न कि प्राइवेट।[1] ये "आदर्श" विद्यालय नहीं, "वास्तविक" विद्यालय हैं जो शहरी क्षेत्रों में स्थित हैं। सभी में गरीब और अश्वेत छात्रों की अच्छी-खासी संख्या है। इसके अलावा ये सभी धन के अभाव, कर्मचारियों की कमी, नौकरशाही नियम-कायदों के दबाव, "ऊँचे स्तर" और "श्रेष्ठता" की बढ़ती माँग आदि की वास्तविक चुनौतियों से जूझ रहे हैं। लेकिन फिर भी इनमें से हर विद्यालय ने एक ऐसा चुनौतीपूर्ण वातावरण तैयार करने में सफलता हासिल की है जो अकादमिक दृष्टि से गम्भीर भी है और साथ ही सामाजिक दृष्टि से आलोचनात्मक भी।

इन विद्यालयों की कहानी उन्हीं शिक्षाकर्मियों के शब्दों में बयान की गई है जिन्होंने इन्हें अमली जामा पहनाया है। कहानियाँ ईमानदारी से कही

गई हैं और उन संघर्षों तथा तनावों को भी छोड़ा नहीं गया है जो सफलता की राह में आए। यह बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि शिक्षा सम्बन्धी साहित्य में विद्यालय-सुधार की आसान सफलताओं के रूमानी किस्से भरे पड़े हैं। लेकिन सफलता का रास्ता कभी आसान नहीं होता। हर विद्यालय में एक भिन्न जोखिम उठाना था और विचारधारागत तथा नौकरशाही की चुनौतियों से पार पाना था। लेकिन इन तनावों और चुनौतियों के होते हुए भी ये विद्यालय इस बात की गवाही देते हैं कि प्राचीन शिक्षण संरक्षणवादी विचारधाराओं की ओर लौटने के अभियान और गम्भीर वित्तीय कठिनाइयों वाले इस दौर में भी आलोचनात्मक शैक्षणिक नीतियाँ, पद्धतियाँ बनाना और उनके बचाव में खड़े होना सम्भव है, वह भी वास्तविक विद्यालयों में ताकि छात्रों, अध्यापकों और स्थानीय समुदायों का भला हो सके। यह विजय उन क्षेत्रों में हुई है जो आजकल सर्वाधिक विवादास्पद क्षेत्रों में से हैं। यानी काम की दुनिया और पढ़ाई-लिखाई के बीच रिश्ता कायम करना, विद्यालय पाठ्यक्रम को विभिन्न नस्लों, समुदायों, और संस्कृतियों के बच्चों और लोगों से जोड़ना, शिक्षाशास्त्र और विषयवस्तु के ऐसे मॉडल बनाना जिन्हें अलग-थलग पढ़े बच्चे भी अपने लिए अर्थपूर्ण समझें, ऐसी परिस्थितियाँ पैदा करना जिनमें समुदाय के लोग अपने बच्चों की शिक्षा से गहरा लगाव और दिलचस्पी महसूस करें, और विद्यालय तथा कक्षाओं को ऐसा स्थान बनाना जहाँ अध्यापक भी अपने काम को फलप्रद व सन्तोषप्रद मानें।

यहाँ जिन शिक्षाकर्मियों ने अपनी कहानी कही है उन्हें — कम से कम सरकारी तौर पर — वैसी दिक्कतों का सामना नहीं करना पड़ता जैसा इंग्लैण्ड में अध्यापकों, प्रधानों, अभिभावकों और समुदाय सदस्यों को करना पड़ता है। अमरीका में कोई सरकारी राष्ट्रीय पाठ्यक्रम नहीं है और न कोई सरकारी तौर पर मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय परीक्षा कार्यक्रम जो राष्ट्रीय पाठ्यक्रम से जुड़ा हो। इसके अलावा शिक्षा के बाज़ारीकरण की ज़ोरदार माँग अभी अमरीका में उठना शुरू ही हुई है। और ये लोग इंग्लैण्ड और वेल्स में ऐसा किए जाने की कुछ ज़्यादा ही सुनहरी तस्वीर खींच रहे हैं।[2] ज़रा सोचिएः कोई "लीग टेबल" नहीं, कोई निर्धारित राष्ट्रीय पाठ्यक्रम नहीं, कोई राष्ट्रीय परीक्षा कार्यक्रम नहीं, अर्थात् विद्यालयों के प्रतियोगी बाज़ार में अपनी छवि की कुछ कम चिन्ता।

लेकिन इन शिक्षाकर्मियों को जिस स्थिति का सामना करना पड़ रहा है, यह उसकी पूर्णतया रूमानी तस्वीर है। क्योंकि समानताएँ हद से ज़्यादा

हैं और अन्तर बेहद मामूली। हालाँकि अमरीका में कोई राष्ट्रीय पाठ्यक्रम नहीं है, लेकिन व्यवहार में एक राष्ट्रीय पाठ्यक्रम है। यह स्थापित होता है हर विषय की पाठ्यपुस्तकों से, पाठ्यपुस्तकें जो सर्वाधिक ताकतवर राज्यों में बेहद कड़े और बेहद सुनिश्चित सरकारी निर्देशों के अनुसार लिखी जाती हैं। प्रकाशक उन पुस्तकों को छापेंगे ही नहीं जिनकी टेक्सास और कैलीफोर्निया जैसे अधिक आबादी वाले राज्यों में स्वीकृत होने और खरीदे जाने की सम्भावना न हो। इस तरह एक ऐसे देश में जहाँ पाठ्यक्रम मानक पाठ्यपुस्तकें बन जाने की दिशा में हो, सारा देश बुनियादी तौर पर वही पढ़ाता है जो कुछ सीमित राज्यों में बिकता है। इस कारण, स्पष्टतः एक राष्ट्रीय पाठ्यक्रम है। बस इतना है कि वह निगाहों से ओझल है।[3]

मीडिया के काम करने के तरीकों ने इस चीज़ को और भी ताकतवर बना दिया है। असफल होते विद्यालयों के बारे में लगातार खबरें दी जाती हैं। इन रिपोर्टों में "पारम्परिक" विषयों और शिक्षा के पारम्परिक तौर-तरीकों की ओर "लौटने" का निरन्तर आग्रह रहता है। इसलिए अध्यापक हमेशा वही पढ़ाने के दबाव में रहते हैं जिसे कुछ सुव्यवस्थित और सम्पन्न (और अक्सर दकियानूसी) समूहों ने पढ़ाने के लिए उचित विषयवस्तु और पद्धति तय कर रखा है।

फिर अधिकांश राज्यों ने अब सभी प्रमुख विषय क्षेत्रों में एक राज्यव्यापी परीक्षा प्रणाली को अपना रखा है। दिन-ब-दिन अध्यापक "परीक्षा के हिसाब से" पढ़ाने पर मजबूर हो रहे हैं। यदि वे इस सम्बन्ध में अपनी स्वायत्तता बनाए रखना भी चाहें तो भी अधिकांश पाठ्यपुस्तकें और शिक्षण सामग्री, जिसे आधिकारिक रूप से ज़रूरी समझा जाता है, अनेक शहरों और राज्यों में परीक्षा प्रणाली से अन्तर्सम्बन्धित है। संक्षेप में, "परीक्षा की पूँछ पाठ्यक्रम का शरीर हिला रही है।" दुर्भाग्य से दिनोंदिन अमरीकी विद्यालयों में ऐसे विचार प्रभुत्व जमाते जा रहे हैं जिनके अनुसार जो भी कक्षा में हो रहा है उसकी नापतौल होनी चाहिए, और जो नहीं हो रहा उसकी भी, क्योंकि वह आज नहीं तो कल हो सकता है। हम यहाँ ज़रूरत से ज़्यादा "प्यारे" नहीं होना चाहते, लेकिन इंग्लैण्ड और अमरीका में अध्यापक जिन परिस्थितियों से दो-चार हो रहे हैं, वे पहली नज़र में तो अलग-अलग लगती हैं, लेकिन असल में हैं एक जैसी ही, खासकर अब जब परीक्षा परिणाम समाचारपत्रों में छपने लगे हैं, और उनके आधार पर विद्यालयों की एक-दूसरे से तुलना की जाने लगी है।

एक और उदाहरण देखें तो यह सब निरन्तर एक विशिष्ट और सीमित ध्येय से जुड़ता जा रहा है। इसी अनुपात में सीमित होती जा रही है पाठ्य सामग्री और वे मूल्य जो सिखाने हैं। हालाँकि यह इंग्लैण्ड या वेल्स की तरह राष्ट्रीय स्तर पर निश्चित नहीं किया जाता है, लेकिन समूचे देश में राज्य और शहर इस प्रकार की सूचियाँ बना रहे हैं और अध्यापकों तथा प्रशासकों को लगातार उनके प्रति जवाबदेह बनाया जा रहा है। “मानक उपलब्धि लक्ष्य” जिन्हें अमरीका में “मानक और प्रतिमान” कहा जाता है, कम से कम अदृश्य तो नहीं ही हैं। हालाँकि जवाबदेही की व्यवस्थाओं में कोई अनिवार्य बुराई नहीं है, लेकिन इनमें से कई थोपी हुई हैं, लचीली नहीं हैं और बगैर यह सोचे लागू कर दी गई हैं कि कक्षाओं में वास्तव में क्या हो रहा है। जबकि गरीबी बढ़ रही है, बेरोज़गारी के परिणाम दिखाई दे रहे हैं, सामाजिक सुरक्षा संजाल छिन्न-भिन्न है, और भीतरी शहर नष्ट हो रहे हैं। ऐसे में इन दोनों चीज़ों से शक्तिशाली समूहों को अक्सर यह बहाना मिल जाता है कि वे कठोर परिश्रमी शिक्षाकर्मियों को उन चीज़ों के लिए भी दोषी ठहराएँ जिन पर उनका कोई वश नहीं है।

लेकिन ध्यान देने की बात सिर्फ मानकीकृत लक्ष्यों का होना नहीं है। अक्सर इन मानकों की विशिष्ट विषयवस्तु ऊपर से लादी जाती है। शायद यहाँ एक उदाहरण से बात साफ हो। खुद हमारे राज्य विस्कॉन्सिन में जनशिक्षण विभाग (जो राज्य में शिक्षा मंत्रालय के समान है) ने आरम्भ से ऊपर तक मानक विकसित करने में अनेक वर्ष लगाए। इन्हें बनाने में अध्यापक, प्रशासक, शिक्षाशास्त्री, समुदाय के सदस्य, कार्यकर्ता सब लगे हुए थे। इन्होंने न सिर्फ ये मानक बनाए बल्कि उन्हें लचीला, अधिक स्वीकार्य और उपयोगी बनाने के लिए उनका पुनर्लेखन भी किया और उन्हें लागू करने के तरीकों के बारे में विचार-विमर्श भी किया। राज्य के रूढ़िवादी गवर्नर ने हमेशा “विकेन्द्रीकरण” की बात करने वाले लेकिन मन से पाठ्यक्रम, शिक्षण और परीक्षा प्रणाली पर कठोर केन्द्रीय नियंत्रण के प्रबल पक्षधर विधायकों के सहयोग से इसे अस्वीकार कर दिया और उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर शक्तिशाली एक दक्षिणपन्थी “थिंकटेंक” द्वारा प्रस्तुत विषयवस्तु सम्बन्धी मार्गदर्शक नीति के अनुकूल बनाकर पूरी तरह नए सिरे से लिखवाया। नए मानक उन पहले वाले मानकों जैसे बिलकुल नहीं थे जिन्हें अधिक लोकतांत्रिक तरीके से बनाया जा रहा था और जो तैयार होने ही वाले थे।

एक और समानता इसी से जुड़ी हुई है जिसका सामना अटलांटिक के दोनों

ओर के शिक्षाकर्मियों को करना पड़ रहा है। इंग्लैण्ड और वेल्स की तरह ही इस किताब से सम्बद्ध सभी अध्यापकों को नौकरशाही की सख्त नीतियों से जूझना पड़ा है। प्रबन्धनवाद – जिसमें लगातार ज़्यादा कार्यकुशलता, लागत में कमी और हर बार पहले से बेहतर परीक्षा परिणाम की माँग है – विद्यालयों को अर्थव्यवस्था की "आवश्यकताओं" से जोड़ने की भी उतनी ही तगड़ी माँग से जुड़ा हुआ है। प्रतियोगिता की भावना, मानक, श्रेष्ठता, "मूलतत्व" – ये जगमगाते शब्द हैं। बाकी सब फालतू की अय्याशी है जिसे हम वहन नहीं कर सकते।

समूचे देश के विद्यालयों पर इस सबका असर पूर्वानुमानित ही रहा है। अध्यापकों में मानसिक दबाव में बढ़ोतरी हुई है, उनका काम तीक्ष्णतर हो गया है। प्रशासकों का काम यह हो गया है कि वे शिक्षण और पाठ्यक्रम की कम से कम फिक्र करें और विद्यालय की छवि की ज़्यादा से ज़्यादा। इससे एक निश्चित भावना का जन्म हुआ है (जो हमारे विचार में एक बिलकुल ठीक धारणा पर आधारित है)। वह यह कि शिक्षाकर्मियों और स्थानीय समुदायों ने स्वायत्तता और नियंत्रण अधिकार पाने की बजाय वास्तव में उन्हें खो दिया है। जब हम अमरीका के शिक्षाकर्मियों से बात करते हैं तो हमें लगता है कि वे इंग्लैण्ड के शिक्षाकर्मियों की चिन्ताओं को शब्दशः दोहरा रहे हैं। अटलांटिक के दोनों तरफ प्रशासक इस बात से परेशान हैं कि "उनके अधिकार क्षेत्र के लगातार कम होते जाने के माहौल में एक केन्द्रीकृत पाठ्यक्रम के तहत निरन्तर बेहतर प्रदर्शन के लिए उन्हें मजबूर किया जा रहा है।"[4] तो दोनों परिप्रेक्ष्यों में अध्यापक और प्रधान (जिन्हें अमरीका में प्राचार्य कहा जाता है) काम के ज़्यादा बोझ और जवाबदेही की लगातार बढ़ती माँगों, बैठकों के कभी खत्म न होने वाले सिलसिलों और अनेक मामलों में भावनात्मक और भौतिक संसाधनों की बढ़ती हुई कमी को महसूस कर रहे हैं।[5] लोगों को दक्षताविहीन और हतोत्साहित करना लोकतांत्रिक और समालोचनात्मक शिक्षा का रास्ता नहीं है; उनका रास्ता इससे बिलकुल उलटा है।

अन्य समानताएँ भी आश्चर्यजनक हैं। अटलांटिक के दोनों तरफ विद्यालयीन शिक्षा पर "बाज़ारीकरण" के दबाव का एक जैसा असर पड़ा लगता है। इस दावे के बावजूद कि बाज़ारीकरण से नए विकल्प पैदा होंगे, बाज़ार पाठ्यक्रम, शिक्षाशास्त्र, संगठन, ग्राहक समूह और यहाँ तक कि विद्यालय की छवि तक में किसी प्रकार की विविधता को प्रोत्साहन देता नहीं मालूम होता। ऐसा लगता है जैसे वह लगातार विकल्पों को अवमूल्यित कर रहा

है और शिक्षण तथा अध्ययन के पारम्परिक स्वरूपों को ताकतवर बना रहा है। दुर्भाग्य से "परम्परा" की ओर इस वापसी के परिणाम देखकर कोई ताज्जुब नहीं होता। शिक्षक और पाठ्यक्रम के ज़्यादा आलोचनात्मक स्वरूपों का अवैधीकरण हो रहा है। ट्रैकिंग, स्ट्रीमिंग और सेटिंग के माध्यम से श्रेणीबद्धता का पुनर्प्रवेश करवाया जा रहा है तथा डी-ट्रैकिंग की सम्भावना और भी कम होती जा रही है। "प्रतिभाशाली" बच्चों और "फास्ट ट्रैक" कक्षाओं पर ज़्यादा ज़ोर दिया जा रहा है, जबकि वे बच्चे जो पढ़ने में ज़्यादा होशियार नहीं हैं, अब इसी कारण "कम आकर्षक" बन गए हैं। कोई आश्चर्य नहीं यदि प्रवेश और निर्गम का यह भेदभाव वर्ग, नस्ल और लिंग के अन्तर को और कटु बना दे।[6] इस तरह इस बात में तो अन्तर हो सकता है कि औपचारिक प्राधिकार कहाँ अवस्थित है या नियंत्रण किसके हाथ में है, लेकिन इससे हमें यह नहीं समझना चाहिए कि अटलांटिक के दोनों तरफ — और ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैण्ड तथा अन्यत्र — अध्यापकों की परिस्थितियाँ एक-दूसरे से सर्वथा भिन्न हैं। दुर्भाग्य से ऐसा एकदम नहीं है।

इनमें से अनेक नीतियाँ और परिपाटियाँ तो ताकतवर नवउदार और नवरूढ़िवादी समूहों की क्षमता की बदौलत आईं जो बेरोज़गारी के लिए, पारम्परिक ज्ञान और मूल्यों के तथाकथित क्षरण के लिए और समाज में जो कुछ भी गलत होता है उसके लिए शिक्षाकर्मियों को दोष देते हैं। इसके लिए दोनों समूहों द्वारा प्रस्तावित समाधान लगभग एक जैसा था — अधिक नियंत्रण करो, अध्यापकों और प्राचार्यों को परीक्षा परिणामों के लिए कठोरतापूर्वक जवाबदेह बनाओ वगैरह। ठीक इसी दौरान शिक्षा को बाज़ारीकरण की तरफ धकेलने की कोशिश भी जारी थी। सरकार ही नहीं अभिभावक भी बच्चों को कट्टर प्रतियोगी बनाने के लिए विद्यालयों पर दबाव डाल रहे थे कि वे बाज़ार के अनुसार चलें, चाहे सामाजिक न्याय के रूप में इसकी जो भी कीमत चुकानी पड़े। और यह कीमत गरीब बच्चों के चिन्हित समूहों को ही नहीं, अधिक लोकतांत्रिक और आलोचनात्मक शिक्षण पद्धति को भी चुकानी पड़ेगी। ऐसे समूहों और छात्रों की जैसी घटिया सेवा वर्तमान पाठ्यक्रम और बाज़ार द्वारा प्रोत्साहित पारम्परिक प्रतिरूप कर रहे हैं, यह पद्धति कम से कम उनसे तो बेहतर ही करती।

जैसी कि कल्पना की जा सकती है, ऐसे तमाम दबावों ने शिक्षाकर्मियों की ज़िन्दगी और मुश्किल कर दी है। लेकिन कठिन का मतलब असम्भव नहीं होता। इंग्लैण्ड की ही तरह अमरीका में भी अध्यापकों और प्रशासकों ने इसकी काफी तीखी आलोचना की। और इंग्लैण्ड की ही तरह यहाँ भी

प्रतिक्रिया सिर्फ आलोचना तक सीमित नहीं रही। शिक्षाकर्मियों ने पाठ्यक्रम संयोजन, शिक्षण और परीक्षण के कुछ बहुत सुचिन्तित और व्यावहारिक तरीके विकसित किए हैं जो मानकीकृत पाठ्यक्रम, परिसीमनकारी सतत् मूल्यांकन और लागत तथा "दिखावे" में कमी की माँगों के सामने डटकर भी न सिर्फ बाहरी माँगों को पूरा करते थे बल्कि एक अनुक्रियाशील और सामाजिक दृष्टि से न्यायपूर्ण शिक्षा की भीतरी माँग को भी।

लोकतांत्रिक विद्यालय में सम्मिलित अध्याय बताते हैं कि जब शिक्षाकर्मी, अभिभावक, सामुदायिक कार्यकर्ता और छात्र इन तमाम दबावों का रचनात्मक प्रत्युत्तर देने के लिए उठ खड़े होते हैं तो क्या होता है। वे इस बात का भी मुखर तकाज़ा हैं कि शिक्षा जीवन की तैयारी नहीं, खुद जीवन है। हमें विश्वास है कि ऐसी ही कहानियाँ इंग्लैण्ड के शहरों और कस्बों में भी पाई जा सकती हैं। सच तो यह है कि हमने उन्हें ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैण्ड, और जहाँ-जहाँ भी हम उन शिक्षाकर्मियों के साथ काम करने और उनसे सीखने गए जो अपने छात्रों और समुदायों के जीवन में सचमुच परिवर्तन ला रहे हैं, घटित होते देखा है। यदि इस पुस्तक में दिए गए उदाहरण अन्य लोकतांत्रिक शिक्षाकर्मियों को भी अपनी कहानी सुनाने के लिए प्रेरित कर सकें, ताकि हम सब एक-दूसरे से सीख सकें कि क्या सचमुच कारगर होता है, तो इस पुस्तक का प्रकाशन सार्थक हो जाएगा।

लोकतांत्रिक विद्यालय को जिस तरह की गर्मजोशी भरी प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हुई हैं उससे इसके सभी लेखक प्रफुल्लित हैं। हमें शुरू से लग रहा था कि मुख्य मीडिया अध्यापकों तथा अन्य शिक्षाकर्मियों की जो तस्वीर उभारता है, और रूढ़िवादी आलोचकों द्वारा उन पर जो आरोप मढ़े जाते हैं, यह सब उस परिश्रमपूर्ण प्रयास को ज़रा भी उजागर नहीं करता जो ये लोग छात्रों के जीवन में परिवर्तन लाने के लिए करते हैं। मीडिया ने तो शिक्षाकर्मियों को लापरवाह, गैररचनात्मक, स्वार्थी (आलसी और ज़रूरत से ज़्यादा वेतन पाने वालों) के रूप में चित्रित किया है, जिन्हें देखते हुए पाठ्यक्रम और मूल्यांकन पर केन्द्रीय नियंत्रण और बाज़ार की प्रतियोगिता का दबाव, दोनों ज़रूरी हैं। यह छवि इतने व्यापक रूप से फैलाई जा चुकी है कि हम इसमें उन अध्यापकों और प्राचार्यों को पहचान ही नहीं सके जिनके साथ हमने काम किया। हम इस बहुप्रचारित विचार से पूरी तरह असहमत थे कि हमारे अपने देश में तथा अन्यत्र जो प्रगतिशील शिक्षानीतियाँ और पद्धतियाँ लागू की गई थीं वे असफल रही हैं। उलटे हमें विश्वास था कि

सफलता की अनकही कहानियाँ बड़ी तादाद में मौजूद हैं और आज जो उनसे करने और जो नहीं करने को कहा जा रहा है उससे अनेकानेक अध्यापक बेहद नाखुश और मायूस हैं। आज के रूढ़िवादी समय में जब इंग्लैण्ड और अमरीका के बड़े और सत्तासीन राजनीतिक दल भी रूढ़िवादी शिक्षा और रूढ़िवादी सामाजिक एजेण्डे को लागू करने पर सहमत हो चुके लगते हैं, हमें विश्वास था कि इन परिस्थितियों में जो हो सकता है उसकी एक साफ तस्वीर बनाना ज़रूरी है।

यह तो हम जानते थे कि अनेक अन्य शिक्षाकर्मी — खासकर इस इब्तिदाई दौर में — हमारी तरह ही सोच रहे हैं, लेकिन हमें यह नहीं पता था कि इस पतली-सी पुस्तक पर हमें इतनी व्यापक प्रतिक्रिया प्राप्त होगी। अकेले अमरीका में अब तक इस पुस्तक की 250,000 प्रतियाँ शिक्षाकर्मियों के हाथों में पहुँच चुकी हैं। जापानी शिक्षक संघ ने इस पुस्तक का अपना संस्करण प्रकाशित किया है। इस पुस्तक का अनुवाद ब्राज़ील, अर्जेन्टीना, चिली, स्पेन तथा अन्य देशों में लोकतांत्रिक शिक्षाकर्मियों का प्रस्थान बिन्दु जैसा बन गया है। हमारे विचार से इससे एक अत्यन्त महत्वपूर्ण बात का पता चलता है। और वह यह कि अनेक देशों के शिक्षाकर्मी, सामुदायिक कार्यकर्ता और सरकारों के प्रगतिशील सदस्य निरन्तर ऐसे रास्तों की तलाश कर रहे हैं जिनके माध्यम से वे अपने हृदय में बसे लोकतांत्रिक आदर्शों को कार्यरूप में परिणत कर सकें। बेशक, कोई भी एक किताब सफलता पाने के लिए हमारे सारे सवालों का जवाब नहीं दे सकती। लेकिन हमें आशा है कि सक्रिय शिक्षाकर्मियों ने यहाँ जो कहानियाँ कही हैं उनसे आपको "मैं इस सोमवार को क्या करूँ" जैसे प्रश्नों के बेहद उत्तेजक उत्तर मिलेंगे। ये सब मूलभूत रूप से हमारी साझा स्मृति को संरक्षित करने और हमारे राष्ट्र के विद्यालयों, कक्षाओं और समुदायों में लोकतंत्र की विराट सरिता को सतत् प्रवाहित रखने के लिए प्रतिबद्ध हैं। ये सब इंग्लैण्ड में रह रहे आप जैसे अनेक लोगों की तरह यह सुनिश्चित करने के लिए यथासम्भव सब कुछ कर रहे हैं कि लन्दन के उस समाचारपत्र में प्रकाशित सुर्खियाँ और शिक्षा के रूप की प्रस्तुत धारणाएँ झूठ हैं।

## टिप्पणियाँ

1 कुछ अन्तरों के साथ अमरीका में स्कूल व्यवस्था त्रिस्तरीय है— प्राथमिक विद्यालय, जिनमें किंडरगार्टन से लेकर पाँचवी-छठी कक्षा तक के बच्चे (5 वर्ष से 11-12 वर्ष तक की आयु के) होते हैं; फिर माध्यमिक विद्यालय, जिनमें छठी-सातवीं से आठवीं-नवीं कक्षा

तक के बच्चे (11-12 वर्ष से 13-14 वर्ष की आयु तक) होते हैं; और फिर उच्चतर माध्यमिक या उच्च विद्यालय जिनमें नवीं या दसवीं से बारहवीं कक्षा के बच्चे (13-14 वर्ष से 17-18 वर्ष की आयु तक) होते हैं।

2 इसे पॉलिटिक्स, मार्केट्स एण्ड अमेरिकाज़ स्कूल्स (जॉन चब और टेरी मोए, ब्रुकिंग इंस्टीट्यूट, वॉशिंगटन, 1990) में अच्छी तरह देखा जा सकता है। ऐसे प्रस्तावों की आलोचनाएँ तो — जैसा कि आप सोच सकते हैं — खूब हुई हैं। उदाहरण के लिए, कल्चरल पॉलिटिक्स एण्ड एजुकेशन (माइकल डब्ल्यू. एपल, ओपन यूनिवर्सिटी प्रेस, बकिंघम, 1996) और गिविंग किड्स द बिज़नेस (एलेक्स मोलनर, वेस्ट व्यू प्रेस, बोल्डर, 1996).

3 देखें ऑफीशियल नॉलेजः डेमोक्रेटिक एजुकेशन इन अ कंज़र्वेटिव एज (माइकल डब्ल्यू. एपल, रूटलेज, लन्दन, 1993) और करीक्यूलम इंटीग्रेशनः डिज़ाइनिंग द कोर ऑफ डेमोक्रेटिक एजुकेशन (जेम्स ए. बीन, टीचर्स कॉलेज प्रेस, न्यू यॉर्क, 1997).

4 डिवॉल्यूशन एण्ड चॉइस इन एजुकेशन (जिऑफ व्हिटी, सेली पॉवर और डेविड हाल्पिन, ओपन यूनिवर्सिटी प्रेस, बकिंघम, 1998, पृ. 63)। यह पुस्तक अमरीका तथा इंग्लैण्ड-वेल्स के बीच तुलना का अच्छा स्रोत है। इसमें न्यूज़ीलैण्ड और ऑस्ट्रेलिया की जानकारी भी उपलब्ध है।

5 वही, पृ. 67-68.

6 वही, पृ. 119-120.